ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(9): 462-464
www.allresearchjournal.com
Received: 22-07-2020
Accepted: 27-08-2020

डॉ0 अम्बुज कुमार
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, एस0 बी0 ए0 एन0 कॉलेज दरहेटा–लारी मगध विश्वविद्यालय, बोधगया बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 अम्बुज कुमार
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र, एस0 बी0 ए0 एन0 कॉलेज दरहेटा–लारी मगध विश्वविद्यालय, बोधगया बिहार, भारत

बिहार के बंजारा जनजाति की सामाजिक संरचना में परिवर्तन का एक अध्ययन।

डॉ0 अम्बुज कुमार

सारांश
बिहार अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए सदियों से प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र देश के गिने–चुने स्थानो में एक है, जो सभ्यता के आरम्भ से ही विभिन्न जनजातियों की गतिविधियों का केन्द्र रहा है। यहाँ 33 प्रकार की जनजातियाँ निवास करती है, जो अनेक छोटे–बड़े समूहों एवं उपसमूहों में बँटे है। 2011 के जनगणना के अनुसार बिहार में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 13,36,573 है जो सम्पूर्ण राज्य की जनसंख्या का 1.28 प्रतिशत है। मोतीलाल बंजारा के अनुसार बिहार में बंजारा जनजाति की जनसंख्या लगभग 1500 है। बंजारा जाति की परिगणना बिहार की एक अनुसूचित जनजाति के रूप में 1956 में हुई। यह एक घुमन्तू एवं अर्द्ध–घुमन्तू जनजाति है, जो एक स्थान पर बसकर जीवन–यापन करने के बजाय एक स्थान से दूसरे स्थान पर निरन्तर भ्रमणशील रहता है, फिर भी इनकी विशिष्ट जीवन शैली, अद्भूत रीति–रिवाज, सामाजिक मर्यादा एवं संस्कार, भाषायी विशेषता आज भी अक्षुण्ण बनाये हुए है।

संकेत शब्दः घुमन्तू, व्यापार, सामाजिक संरचना, संस्कृति, परिवर्तन

प्रस्तावनाः
बंजारो का इतिहास बहुत पुराना है, इनके उत्पत्ति के संबंध में अनेक विचार है। कई वर्षों से व्यापार करने वाली इस जाति के लोगों को बंजारा कहा गया है। ग्रियर्सन (1959) [1] ने बंजारा शब्द का संबंध विकास की दृष्टि से इस प्रकार कहा है – वाणिज्यकार (संस्कृत) → वानिज्जआरों (प्राकृत) → बंजारा (हिन्दी)। अर्थात् बंजारा व्यवसाय सूचक है। बंजारा अनाज लाने ले जाने वाली प्रसिद्ध खानाबदोश जाति है। फ्यूरर हैमनडॉर्फ (1982) [2] ने बंजारा शब्द की उत्पत्ति दो शब्दों के मेल से 'वन' और 'चारक' माना है, जिसका अर्थ हुआ वन में विचरण करने वाले। वही रिजले (1891) [3] के अनुसार "ये लोग मवेशी और अनाज का व्यापार करते थे, इसलिए इन्हें विभिन्न स्थानो के बाजारों में भ्रमण करना पड़ता था, यही घुमन्तू जीवन इनकी नियति बन गई।" बंजारा शब्द के संदर्भ में समाजशास्त्री रसेल तथा हीरालाल (1975) [4] का मत है कि "राजस्थान के मूल निवासी गोर या चारण लोग मध्यकालीन भारत में बंजारा नाम से प्रख्यात हुए। राजस्थान में वाणिज्य का तद्भव रूप विणज प्रचलित है। विणजना का तात्पर्य है व्यापार करना। दरअसल भारत में जातियों की उत्पत्ति का इतिहास देखने पर पता चलता है कि व्यवसाय के आधार पर अनेक जातियों तथा उपजातियों का विकास हुआ है। बंजारा जाति के लोग पहले राजस्थान में लवण का व्यापार करते थे, इसलिये इस जाति को लमानी भी कहा गया है। आगे चलकर लवण के साथ विभिन्न वस्तुओं का व्यापार करने लगे। संस्कृत शब्द वाणिज्य हिन्दी में वनज के रूप में भी बोला जाता है, वनज करने वाला बंजारा कहलाया।
बजरंग लाल लौहिया (1954) [5] ने बंजारा जनजाति के बारे में कहा है कि – "जो बैलो की पीठ पर माल लादकर ले जाते, उन्हें बलदिया कहा जाता था। इनका कोई स्थायी घर नहीं होता। ये निरन्तर चलते फिरते अपना जीवन व्यतीत करते।" बलदिया लदेलिया शब्दों का प्रयोग भी बंजारा जनजाति में दिखायी देता है।
कर्वे (1954) [6] के अनुसार –'जब बंजारा व्यापार के लिए निकल पड़ते तो रास्ते के लिए अपनी सारी व्यवस्था वे साथ रखते – जैसे खाना–पीना, सुरक्षा आदि का प्रबंध। सुरक्षा करने वाले कुत्ते भी वे पालते। जंगल और पहाड़ी रास्तों से बंजारे व्यापार करते थे। सारे प्रान्तों के रास्ते इन्हे मालूम थे। उस समय यातायात की कोई सुविधा नही थी। इसीलिए बंजारा जनजाति का व्यापार ही एकमात्र साधन था। एम0 एल0 शर्मा(1973) [7] के अनुसार रेलगाड़ियों के चलने के पहले व्यावसायिक वस्तुओं के ले जाने का धन्धा मुख्यतः बंजारे ही करते थे।

तात्पर्य बंजारा जनजाति प्राचीन काल से अंग्रेजों के आने तक व्यापार करती रही।
मुगलकाल में भी बंजारा जनजाति व्यापार करने वाली जाति थी। व्यापार के साथ सामान लादकर ले जाने का काम भी वे करते थे। इनके पास काफी संख्या में बैल होता था। ये लोग फौज को रसद भी पहुँचाने का काम किया करते थे। "बंजारा भारत के प्रान्तो में ही नहीं बल्कि मध्य एशिया, अफगानिस्तान, फारस से मूल्तान क्वेटा, खैबर दर्रे से व्यापारियों के काफिले से परिचित थे।"[8] ये लोग अनाज, नमक, गुड़, तेल, कपड़ा, सूत, कपास व हीरे मोतियों को भी एक जगह से दूसरे जगह पहुँचाने का कार्य करता था।
बंजारा जनजाति का मूल स्थान राजस्थान रहा है। जो सदियों से व्यापार के लिए घूमती रही। यह विभिन्न नामों से पहचानी जाती है, जैसे – वनजारा, बंजारी, लमान, लमानी, लभान, लमाकी, लम्बाका, गौर वंजारा, बिंजारी, डपड़िया, मथुरिया, सिर्की वंजारा इत्यादि। उपरोक्त नामों के अलावा बिहार में इसे मधैइया, किच्चक एवं कंजर के नामो से भी पुकारा जाता है।
वास्तव में बंजारा जनजाति का सम्पूर्ण इतिहास उपलब्ध नही है। इनका मूल स्थान, वंशावली, गोत्र भाषा आदि के बारे में अधिक खोज की आवश्यकता है। फिर भी विद्वानों के मतानुसार कहा जा सकता है कि ये जनजातियाँ सदियों से व्यापार करती रही है।
बी0 एस0 गुहा (1947)[9] के अनुसार "बंजारा प्रोटो–आस्ट्रेलॉयड प्रजाति के हैं।" ये लोग बंजारी या लाभामनी भाषा बोलते है।[10] लेकिन क्षेत्रीय भाषा हिन्दी, मैथिली इत्यादि भी बोलने लगे हैं। यह कद में मध्यम, मुख चौड़ा, समतल नासिका वाले होते है। पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की त्वचा का रंग अधिक साफ, नाक–नक्शा सुन्दर होते है। पुरुष सामान्यतः श्याम वर्ण के होते है। इसके बाल काले एवं घुँघराले होते है, साथ ही इनके शारीरिक लक्षण निम्न हिन्दू जैसे होते है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र बिहार राज्य के सुपौल एवं मधुबनी जिले में निवास करने वाले बंजारा जनजाति का समाजशास्त्रीय व मानवशास्त्रीय अध्ययन है। इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

1. बंजारा जनजाति की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक पहलू की जानकारी प्राप्त करना।
2. बंजारा जनजाति की जीवन शैली व मूल सामाजिक संरचना में होनेवाले परिवर्तनों का पता लगाना।

अध्ययन की उपकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों के आलोक में निम्नलिखित उपकल्पनाओं का निर्माण कर विश्लेषण किया गया है।

1. बंजारा जनजाति की सामाजिक संरचना व आर्थिक, राजनीतिक पहलूओं में परिवर्तन हो रहे है।
2. बंजारा जनजाति में परिवर्तन का मूल कारण संस्कृतिकरण के अलावे अन्य प्रक्रिया कार्य कर रही है।

अध्ययन पद्धति :–

प्रस्तुत अध्ययन समाजशास्त्रीय व मानवशास्त्रीय पद्धति को अपनाते हुए सुपौल एवं मधुबनी जिले के क्रमशः 25–25 बंजारा जनजाति के पुरुष व महिलाओं का चयन कर साक्षात्कार अनुसूची विधि अपना कर अध्ययन किया गया है। साक्षात्कार उन बंजारों से लिया गया है जो टूटी–फूटी हिन्दी या मैथिली में बोल सकता था। साथ ही मानवशास्त्रीय ढंग से उनके बीच अर्द्ध–सहभागी विधि अपना कर उनके रीति–रिवाज, संस्कृति और उनकी मूल संरचना व परिवर्तन को अवलोकन कर तथ्य संग्रह किया गया है। जहाँ ये लोग कुछ महिनों या वर्षों से निवास करते आ रहे है। इसके अलावा द्वितीयक आँकड़ो के लिए प्रकाशित तथा अप्रकाशित संदर्भित पुस्तकों इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

सामाजिक संरचना :–

बंजारा जनजाति की सामाजिक संरचना परिवार विवाह, नातेदारी संबंधों से जुड़ी होती है। परिवार की सत्ता पितृसत्तात्मक एवं पितृवंशीय होती है। वही एकल परिवार पाया जाता है, जिसमें माता–पिता और अविवाहित बच्चे शामिल रहते हैं।

तालिका 1: प्रस्तुत अध्ययन में निवास के आधार पर बिहार के बंजारा परिवार के स्वरूपों का निम्नलिखित ऑकड़े एकत्र हुए हैं।

क्र0स0	निवास के आधार पर बंजारा परिवार	संख्या	प्रतिशत
01	पितृ स्थानीय परिवार	40	80
02	मातृ स्थानीय परिवार	04	08
03	नव स्थानीय परिवार	06	12
04	मातुल स्थानीय परिवार	00	00
	कूल योग	50	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बंजारा समाज में 80 प्रतिशत परिवार पितृस्थानीय है, वही 8 प्रतिशत मातृस्थानीय परिवार पाया गया। मातृस्थानीय परिवार के पीछे वधू के पिता को पुत्र न होना कारण था। जबकि 12 प्रतिशत ऐसे परिवार थे जो विवाह के बाद किसी नये झुण्ड में रहने के लिए चले गये थे। नव स्थानीय परिवार अपने नातेदारी एवं गोत्र समूह के टोलियों में ही पाये गये। इन तथ्यों से अध्ययन प्रश्न भी प्रमाणित होता है कि बंजारो में भी सामाजिक संरचना के तत्व परिवार का स्वरूप अवश्य विकसित है।
बंजारों में विवाह एक महत्वपूर्ण संस्कार है। ये प्रायः रक्त एवं गोत्र संबंधो से बाहर होते है। विवाह के पूर्व 'सगाई' की रस्म होती है, उनमें वधू मूल्य तय किया जाता है। वधू मूल्य के रूप में नकद या आभूषण, पशु इत्यादि दिया जाता है। विवाह कार्यक्रम पाँच दिनों तक चलता है। बंजारों में एक नई चीज देखने को मिला, विवाह के समय लड़की के माँग में सिन्दूर एक छोटा सा भाला (लोहा का हथियार) से दिया जाता है।[11] शादी में मदिरा और माँस का सेवन किया जाता है। बंजारा एवं बंजारन नाचते–गाते है। साथ ही काली माँ को बलि (प्रथा) चढ़ाने का प्रावधान है।

तालिका 1: बिहार (सुपौल एवं दरभंगा जिले) के बंजारों में पति और पत्नी की संख्या के आधार पर विवाह के निम्न ऑकड़े संकलित हुएः–

क्र0स0	बंजारो में विवाह के प्रकार	संख्या	प्रतिशत
01	एक विवाह	38	76
02	बहुपत्नी विवाह	12	24
03	बहुपति विवाह	00	00
04	समूह विवाह	00	00
	कूल योग	50	100

उपरोक्त आकड़े से स्पष्ट होता है कि बंजारा परिवार में 76 प्रतिशत एक विवाही परिवार है, जबकि 24 प्रतिशत बहुपत्नी विवाह पाया गया। जबकि बहुपति एवं समूह विवाह देखने को नही मिला। हिन्दूओं की तरह बंजारों में भी देवर–भाभी, जीजा–साली परिहास संबंध व भावह–भैसूर के बीच परिहार संबंध पाया जाता है। बंजारों में भी विधवा पूर्नविवाह का प्रचलन है, साथ ही जीवन साथी चुनने के तरीको में सेवा, विनिमय एवं सहपलायन विवाह पाया जाता है।
बंजारो की आर्थिक स्थिति अच्छी नही है। ये लोग प्राचीन काल से दो प्रकार का व्यवसाय करता था। एक व्यापार का तथा दूसरा

केवल माल (वस्तु या पदार्थ) ढोने का। चूँकि इनके पास लाखों की संख्या में बैल होता था। वे बैलों की पीठ पर सामान लादकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते थे। बंजारा नायक (सरदार) के आदेश पर चलते थे। लेकिन आज बिहार के बंजारा जनजाति अनाज व खाद्य सामग्री गाँव–गाँव जाकर, माँग कर अपना जीविका निर्वहन करने को मजबूर हैं। ये लोग वर्ष में 7–8 महीने उसी खाद्य–सामग्री से जीवन जीते है। कुछ बंजारे शहद, जड़ी–बूटी व नाच गाने से भी अपना गुजारा करते है।

बंजारो की राजनीतिक व्यवस्था रक्त सम्बन्ध, नातेदारी, जनमत और न्याय पंचायत से चलती है। इस समाज के मुखिया को नायक, माझी या सरदार कहा जाता है। इनके पाँच सहयोगी होते है जो शपथ एवं परीक्षा के द्वारा सामाजिक मूल्य व नियम एवं प्रथा को तोड़ने वाले व्यक्ति को दण्ड देते हैं। इसमें शारीरिक यातना, जाति च्यूत एवं दंड (नकद या वस्तु) देने का सामाजिक प्रावधान है।

बंजारा हिन्दू देवी–देवता को मानते हैं फिर भी इनकी अपनी बंजारी देवी, सीतला, गहील, काली प्रमुख है। ये लोग तंत्र–मंत्र, जादू–टोना, भूत–पिशाच को मानते है। हिन्दूओं की तरह होली, दीपावली धूमधाम से मनाते है। जिनमें युवक–युवतियाँ नाचती गाती है। इसमें टोटम एवं टैबू भी पाया जाता है।

बंजारों में परिवर्तन का संदर्भ :–

बंजारा समाज आज तीव्र संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, परिवर्तन की आंधियाँ कई दिशाओं से आ रही है, एक ओर आधुनिकीकरण की अनिवार्यता है दूसरी ओर परम्परा का आग्रह। ये लोग बाह्य सम्पर्क के कारण नए जीवनशैली और नए मूल्य ला रहे हैं, जिन्हें अपनी जड़ से कटे आधुनिकता समझकर बिना तर्क से अपना आ रहे हैं। इस अंध अनुकरण ने बंजारों में एक नई चिंता को जन्म दिया है अपनी मूल संरचना एवं संस्कृति को खोकर एक आकृतिहीन भीड़ की गुमनामी में खो जाने की। बंजारा समाज में परिवर्तन और परम्परा के समन्वय के जो प्रयत्न हुए हैं उनके अधिकांश परिणाम हास्यास्पद रहे है, न ही ये लोग अपनी मूल परम्परा व जीवनशैली को बचा पाये हैं और न ही सच्चे अर्थों में आधुनिकता व क्षेत्रीयता का लवादा ओढ़ पाये हैं। बंजारा समाज एक गंतव्यहीन यात्रा की ओर निकल पड़े हैं, क्योंकि इस समाज के पास उनकी सभी समस्याओं का हल नहीं हैं और न ही आधुनिकता के कार्यक्रम में ऐसी शक्ति है कि वह बंजारों की परम्परा को अवहेलना कर समाज को आगे बढ़ा सके। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययनकर्ता ने उन तत्वों को खोजने का प्रयास किया है जिसके फलस्वरूप बंजारा समाज में एक नवीन या परिवर्तित सांस्कृतिक जीवन की संभावनाएँ पैदा की है। शोधकर्त्ता के अनुसार हिन्दूकरण या संस्कृतिकरण, शिक्षा, यातायात, स्वास्थ्य कार्यक्रम, पंचायती राज व्यवस्था, नगरीकरण, औद्योगिकरण, कल्याणकारी, योजनाएँ, वन नीति एवं घुमन्तू जीवन जैसे अनेक उत्तरदायी तत्व हैं जिसके कारण समाज में परिवर्तन देखने को मिल रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि बंजारा सदियों से यहाँ हिन्दू जनता एवं सभ्यता के साथ–साथ रहती आ रही है। हिन्दूओं की निरंतर समीपता ने उनकी जीवन–शैली एवं पारिवारिक संरचना में आमूल परिवर्तन कर दिया है। एकल परिवार की प्रधानता बढ़ती जा रही है एवं बंजारा परिवार के बड़े–बूढ़ो की प्रतिष्ठा पर भी आँच आई है एवं उनका नियंत्रण अपने लोगों पर से कमजोर हो गया है। बंजारन की भूमिका भी बदली है और उनकी आर्थिक उपादेयता के कारण परिवार में स्थिति कुछ सुदृढ़ हुई है। शादी–ब्याह आदि मामलों में भी व्यक्तिगत इच्छा प्रभावी होती जा रही है, वधूधन भी बढ़ता जा रहा है। वस्तु विनिमय की जगह मुद्रा का प्रचलन हो रहा है। प्रेम–विवाह में निरंतर वृद्धि हो रही है। और सहपलायन, क्रय एवं हठ विवाहों में कमी हो रही है। विवाह, जन्म एवं मृत्यू जैसे संस्कार हिन्दू रीति–रिवाजों के मुताबिक होने लगा है। घुमन्तू जीवन एवं आधुनिकता के प्रभाव के कारण बंजारो में खान–पान, मनोरंजन, संस्कृति, स्वास्थ्य एवं रीति–रिवाजों में भी परिवर्तन हुए हैं।

नगरीकरण एवं वननीति के कारण बंजारो की अर्थव्यवस्था में भी बहुत परिवर्तन आया है। ये लोग अपनी जीविकोपार्जन शिकार, व्यापार, खाद्य संग्रह इत्यादि से करते है। मगर अब कुछ बंजारे परम्परागत अर्थव्यवस्था को छोड़कर पशुपालन, दुकान इत्यादि भी करने लगे हैं।

पंचायती राज के कारण बंजारो की परम्परागत जनजातीय पंचायतों पर प्रभाव पड़ा है। ये लोग चुनावों में अपना प्रभाव डालने लगे हैं। राजनीतिक दलों के अपने पक्ष में मत देने के प्रचार ने इन्हें कुछ न कुछ जागरूक अवश्य किया है। बंजारों में कुछ समय पूर्व तक गोत्र के माध्यम से राजनीतिक इकाईयाँ काम करती थी। लेकिन आज गोत्र की भूमिका गौण होती जा रही है। इन लोगों में राजनीतिक चेतना बढ़ गयी है। चुनाव और प्रजातंत्र की राजनीतिक के चलते बंजारा समाज में नये विचारो एवं नयी आकांक्षाओं का भी प्रवेश हुआ है। परम्परागत ग्रामीण नेतृत्व के स्थान पर नये शिक्षित, शहरी बाबू एवं धर्म निरपेक्ष जनजातीय राजनैतिक नेतृत्व उभर रहा है। इन नये नेताओं ने सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों में नेतृत्व प्रदान किया है और उन क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन को गति दी है।

बंजारो के धार्मिक क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। बंजारा आत्मावाद और प्रकृतिवाद, जादू–टोना, तंत्र–मंत्र इत्यादि में विश्वास करते आ रहे हैं, किन्तु हिन्दूओं एवं नगरीकरण के प्रभाव के कारण हिन्दू देवताओं में आस्था, हिन्दू त्योहार मनाना, नामों में जान–बूझकर हिन्दू उपाधियाँ लगाने लगे हैं। ये लोग रामायण एवं हनुमान चालीसा से वर्णित कथा से परिचित हो रहे हैं। बंजारा कबीर पंथी, विष्णु भगत, इत्यादि पंथ को भी मानने लगे हैं। इस प्रकार बंजारा समाज के सामाजिक संरचना में परिवर्तन हुए हैं।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन के प्राप्त तथ्यों के आलोक में कहा जा सकता है कि बंजारा व्यापार करने वाली घुमन्तू जनजाति है। बंजारों में भी अन्य जातियों की तरह सामाजिक संरचना के तत्व परिवार विवाह, नातेदारी व राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक संस्थाएँ कार्य कर रही है। लेकिन लगातार संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण व यातायात सुविधा, वन नीति और अन्य कारणों के कारण इनकी संस्कृति व जीवन मूल्य में परिवर्तन हो रहे हैं। यह परिवर्तन एक तरफ सुखद एवं उज्जवल भविष्य की ओर इंगित करता है तो दूसरी ओर इन परिवर्तनों ने बंजारा समाज में कुछ समस्याएँ भी पैदा की है जिसके कारण वे लोग अपनी मूल संस्कृति, भाषा, रहन–सहन, परम्परा, मूल्य एवं मानदण्ड को तोड़कर एक अज्ञात भविष्य की ओर अग्रसर है।

सन्दर्भ

1. Grierson GA. The Linguistic Survey of India, Calcutta Govt. of India 1921, 136.
2. Haimendort F. Tribes of India : The Struggle for Survival, University of Calofornia London 1982, 198.
3. Risley H. The Study of Ethnology in India 1891, 68.
4. Russell Hiralal RV. Tribes and Castes, The Central Provinces in India, Cosmo Delhi 1975;II:165-167.
5. Lohiya Bajrang Lal. Rajasthan ki Janjatiyan 1954, 167.
6. Karwe CG. Maharashtra Parichay 1954, 628.
7. Sharma KL. Rajasthan 1973, 17.
8. Ashraf KL. Hindustan ke Niwasiyo ka Jiwan 1969, 141.
9. Guha BS. The Racial Elements of India, Popular Prakashan, Bombay, 1947.
10. Deogaoxkar SG. The Banjara, Concept Publishing Company, New Delhi 1992, 6.
11. Banjara Motilal. Supaul District Banjara Nayak.